SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की स्थापना की प्रतिक्रिया–एक अनुशीलन

महेश कुमार शुक्ल, (Ph.D.), इतिहास विभाग,
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
महेश कुमार शुक्ल, (Ph.D.), इतिहास विभाग,
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय),
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/11/2020
Revised on : -----
Accepted on : 26/11/2020
Plagiarism : 01% on 19/11/2020

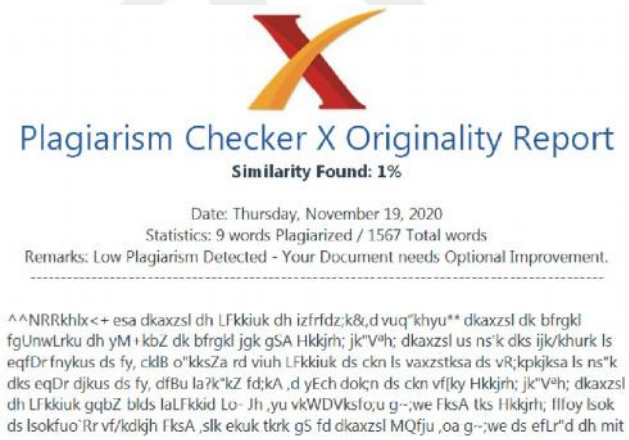
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Thursday, November 19, 2020
Statistics: 9 words Plagiarized / 1567 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

^^NRRkhlx<+ esa dkaxzsl dh LFkkiuk dh izfrfdz;k&,d vuq"khyu** dkaxzsl dk bfrgkl fgUnwLrku dh yM+kbZ dk bfrgkl jgk gSA Hkkjrh; jk"V³h; dkaxzsl us ns'k dks ijk/khurk ls eqfDr fnykus ds fy, cklB o"kksZa rd viuh LFkkiuk ds ckn ls vaxzstksa ds vR;kpkjksa ls ns"k dks eqDr djkus ds fy, dfBu la?k"kZ fd;kA ,d yEch dok;n ds ckn vf[ky Hkkjrh; jk"V³h; dkaxzsl dh LFkkiuk gqbZ blds laLFkkid Lo- Jh ,yu vkWDVksfo;u g--;we FksA tks Hkkjrh; flfoy lsok ds lsokfuo`Rr vf/kdkjh FksA ,slk ekuk tkrk gS fd dkaxzsl MQfju ,oa g--;we ds efLr"d dh mit

शोध सार

कांग्रेस का इतिहास हिन्दुस्तान की लड़ाई का इतिहास रहा है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देश को पराधीनता से मुक्ति दिलाने के लिए बासठ वर्षों तक अपनी स्थापना के बाद से अंग्रेजों के अत्याचारों से देश को मुक्त कराने के लिए कठिन संघर्ष किया। एक लम्बी कवायद के बाद अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसके संस्थापक स्व. श्री एलन ऑक्टोवियन ह्यूम थे, जो भारतीय सिविल सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी थे। ऐसा माना जाता है कि कांग्रेस डफरिन एवं ह्यूम के मस्तिष्क की उपज थी और इन्होंने इस संस्था को भारतीय जनता एवं ब्रिटिश शासन के मध्य एक सुरक्षा कवच के रूप में स्थापित किया था। कांग्रेस की स्थापना के बाद छत्तीसगढ़ की राष्ट्रवादी गतिविधियां कांग्रेस से जुड़ गई और आगे चलकर इसी से प्रेरित होकर संगठित होती रही। संभवतः छत्तीसगढ़ के निवासियों का कांग्रेस से संबंध 1891 ई. के नागपुर अधिवेशन से हुआ। इस अधिवेशन में यहाँ के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, किन्तु कांग्रेस की गतिविधियों का छत्तीसगढ़ से सीधा प्रभाव (1905) नागपुर में आयोजित प्रथम प्रान्तीय राजनीतिक परिषद् के माध्यम से हुआ। 1906 में द्वितीय प्रान्तीय राजनीतिक परिषद् का आयोजन जबलपुर में हुआ इसमें दादा साहेब खापर्डे का स्वदेशी आन्दोलन विषयक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इसी समय रायपुर में कांग्रेस की शाखा स्थापित हुई। इसकी स्थापना में बैरिस्टर सी.एम.ठक्कर का योगदान महत्वपूर्ण था। छत्तीसगढ़ का राजनीतिक नेतृत्व नागपुर के राजनीतिज्ञों के कर कमलों में था। छत्तीसगढ़ में तब भी उग्रवादी विचारधारा के नेता दादा साहेब खापर्डे व मुन्जे के समर्थकों की कमी नहीं थी। इन लोगों को अंग्रेजों की न्यायप्रियता में कोई विश्वास नहीं रहा था। ये लोग इस निश्चय पर पहुंचे कि प्रार्थना पत्रों द्वारा कुछ प्राप्त करना असंभव है। इन लोगों की दृष्टि में विदेशी राज्य अपमान जनक था।

मुख्य शब्द

पराधीनता, सुरक्षा–कवच, उग्रवादी, न्यायप्रियता।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रतिष्ठा आज यद्यपि विशुद्ध व व्यवहारिक रूप से राजनीनिक दलों के रूप में है। लेकिन सन् 1885 से 1947 के बीच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक जीवन पद्धति, विचारधारा, स्वतंत्रता के लिए संगठित लोगों की आकांक्षा एवं प्रेरणा का प्रतीक भी बना रहा। कांग्रेस का इतिहास, हिन्दुस्तान की लड़ाई का इतिहास है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देश को इस पराधीनता से मुक्ति दिलाने के लिए बासठ वर्षों तक अपनी स्थापना के बाद के वर्षों में इनसे कठिन संघर्ष किया।[1]

कांग्रेस की स्थापना

एक लम्बी कवायद के बाद अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसके संस्थापक स्व. श्री एलन ऑक्टोवियन ह्यूम थे,[2] जो भारतीय सिविल सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी थे। ऐसा माना जाता है कि कांग्रेस डफरिन एवं ह्यूम के मस्तिष्क की उपज थी और इन्होंने इस संस्था को भारतीय जनता एवं ब्रिटिश शासन के मध्य एक सुरक्षा कवच के रूप में स्थापित किया था।[3] इस बात में कोई संदेह नहीं है कि, राजनीतिक जागरण एवं चेतना के विस्तार में 1885 से 1947 तक कांग्रेस अद्वितीय संस्था बनी रही एवं भारतीय स्वतंत्रता के संग्राम में कांग्रेस भारतीय जनमानस की अभिव्यक्ति का पर्यायवाची समझी जाने लगी।

कांग्रेस के जन्म से पहले भी देश में सामाजिक व धार्मिक संगठनों का प्रादुर्भाव हो चुका था। राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज, स्वामी दयानंद ने आर्यसमाज, स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की और श्रीमती एनी बिसेन्ट ने थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की, लेकिन ये सभी संस्थाओं का कार्यक्षेत्र सामाजिक व धार्मिक कार्यों तक सीमित था।

राजनीतिक व अर्द्धराजनीतिक स्तर पर भी कुछ संस्थाएं बनी थी, परन्तु वे न तो अधिक सशक्त थी और न उनका स्वरूप अखिल भारतीय था। सर्वप्रथम 1881 ई. में ''कलकत्ता ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन'' की स्थापना हुई। इसके कुछ वर्षों पश्चात् इसी प्रकार की एक अन्य संस्था 'एसोसिएशन' की स्थापना बम्बई में हुई यह दोनों संस्थाएं अत्यंत विनम्र थी और यदाकदा सरकारी कानूनों की आलोचना कर दिया करती थी। कालान्तर में ये संस्थायें समाप्त हो गई।[4]

अखिल भारतीय स्तर पर पहली व्यवस्थित संस्था 'इंडियन एसोसिएशन' की स्थापना सुरेन्द्र नाथ बेनर्जी ने की। इसके प्रथम अधिवेशन से प्रभावित होकर अन्य संस्थाएं भी उदित हुई। 1884 में बंगाल में 'नेशनल लीग' तथा 1885 में मद्रास में महाजन सभा की स्थापना हुई।[5]

कांग्रेस की स्थापना के बाद छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आन्दोलन

कांग्रेस की स्थापना के बाद छत्तीसगढ़ की राष्ट्रवादी गतिविधियां कांग्रेस से जुड़ गई और आगे चलकर इसी से प्रेरित होकर संगठित होती रही। संभवतः छत्तीसगढ़ के निवासियों का कांग्रेस से संबंध 1891 ई. के नागपुर अधिवेशन से हुआ, इस अधिवेशन में यहां के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, किन्तु कांग्रेस की गतिविधियों का छत्तीसगढ़ से सीधा प्रभाव (1905) नागपुर में आयोजित प्रथम प्रान्तीय राजनीतिक परिषद् के माध्यम से हुआ। 1906 में द्वितीय प्रान्तीय राजनीतिक परिषद् का आयोजन जबलपुर में हुआ इसमें दादा साहेब खापर्डे का स्वदेशी आन्दोलन विषयक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इसी समय रायपुर में कांग्रेस की शाखा स्थापित हुई। इसकी स्थापना में बैरिस्टर सी.एम. ठक्कर का योगदान महत्वपूर्ण था।

कांग्रेस के दिग्गजों के ज्ञान की गंगा की एक धारा प्रवाहित हो रही थी और जनता कांग्रेस के निर्धारित कार्यक्रम से अवगत थी। वस्तुतः ब्रिटिश दमनात्मक माहौल पर राष्ट्रीय जागरण के रूख में, समानान्तर गति से एक भिन्न धारा का श्रीगणेश किया गया। यद्यपि ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से इस धारा का परिचय कांग्रेस में उग्रवाद

की शुरूआत के काल में हमें प्राप्त होता है, लेकिन उस आगामी अंकुरण का बीजारोपण अभी से हो गया था। दिसम्बर 1891 में कांग्रेस का सप्तम अधिवेशन नागपुर में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में शासन द्वारा किसानों पर लगाये गये नहर कर की आलोचना की गई। उपस्थित मालगुजारों और कृषकों ने इस कर का विरोध किया। इस अधिवेशन में छत्तीसगढ़ के अनेक प्रभावशाली नेताओं ने भाग लिया, उनमें बैरिस्टर सी.एम.ठक्कर (रायपुर), पं. माधवराव सप्रे (रायपुर), पं. रामदयाल तिवारी (रायपुर), बद्री प्रसाद साव (बिलासपुर) डोमारसिंह नंदवंशी (धमतरी) आदि प्रमुख थे। 1892 में कई जिलों का बन्दोबस्त कर, किसानों और मालगुजारों पर जो कर की राशि बढ़ा दी थी मध्यप्रान्त के चीफ कमिश्नर के बिलासपुर दौरे के अवसर पर अंचल के कृषक मालगुजारों ने नहर कर के विरोध में मि. वुडवर्ड को ज्ञापन दिया।[6]

इस ज्ञापन में दुर्भिक्ष और संक्रमण से उत्पन्न स्थिति, वसूली अधिकारियों के दुर्व्यवहार की ओर शासन का ध्यान आकर्षित करते हुए, भूमि सुधार स्थायी बन्दोबस्त, एवं सिंचाई सुविधाओं के विकास की मांग की थी। 1889 के बाद से छत्तीसगढ़ दुर्भिक्ष का शिकार था।

छत्तीसगढ़ में अकाल के निवारण के लिए बड़े–बड़े सेठ साहूकारों से चंदा वसूला जाने लगा। इस फंड को 'इंडियन चेरिटेबल फंड' कहा गया, जिसमें सरकार चंदा तो वसूली रही पर फंड में जमा की गई धनराशि के प्रति अंग्रेज अधिकारियों की ईमानदारी संदेहास्पद थी। सन् 1900 में रायपुर के पंडित माधवराव सप्रे, वामनराव लाखे एवं रामराव चिंचोलकर के सहयोग से 'छत्तीसगढ़ का राष्ट्रीय विचारों से मुक्त' प्रथम मासिक पत्र निकाला, जो आगामी वर्षों में राष्ट्रीय गतिविधियों का 'स्टीयरिंग व्हील' बन गया। उसमें महावीर प्रसाद द्विवेदी, कामता प्रसाद गुरू, रामदास गौड़ जैसे शीर्षस्थ राष्ट्रवादी साहित्यकारों के लेख विचारमाला प्रकाशित होते थे। आर्थिक अभाव व शासकीय दमन के मध्य यह पत्रिका तीन वर्ष तक छपती रही।[7] इसके अतिरिक्त कई पत्रिकाओं के माध्यम से इस घटना की कड़ी निंदा की गई। सन् 1900 के आस–पास छत्तीसगढ़ में सामाजिक राजनीतिक संस्थाओं का तेजी से गठन और विकास राजनीतिक जागरूकता की दृष्टि से उल्लेखनीय है। रायपुर के 'मालिनी रीडर्स क्लब', राजिम का 'कवि समाज' रायपुर का 'छत्तीसगढ़ बाल समाज' जनचेतना की दृष्टि से उल्लेखनीय है।[8]

एक तरफ भारतीय जनता वर्षा के अभाव, दुर्भिक्ष व महामारी से संतृप्त थे, तो दूसरी ओर 1905 में ब्रिटिश भारतीय शासन के कर्णधार लार्ड कर्जन ने कलकत्ता विश्वविद्यालय की दीक्षांत भाषण में कहा था कि– 'भारत जैसी कोई चीज नहीं है', इस वाक्य का प्रतिरोध प्रायः सम्पूर्ण भारत में हुआ था। इसका परिणाम बंग–भंग आन्दोलन या अन्य क्रांतिकारी आन्दोलनों के रूप में दिखाई पड़ा। वस्तुतः यह एक राष्ट्रीयता का अपमान था, जिसे प्रबुद्ध भारतीयों ने कभी भी स्वीकार नहीं किया।[9]

इन्हीं दिनों दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों की स्थिति सोंचनीय थी। भारतीयों पर व्यक्तिगत कर लगाया जाता था। निर्दिष्ट घरों में रहना पड़ता था, राजमार्ग पर वे नहीं चल सकते थे तथा प्रथम व द्वितीय दर्जों की रेलयात्रा नहीं कर सकते थे।[10] इसके अतिरिक्त ट्रांसवाल में एक एशियाटिक रजिस्ट्रेशन अधिनियम बना जिसके अनुसार भारतीयों को अपराधियों की तरह उंगलियों की छाप देकर अपना निवेदन करना आवश्यक था। भारतीयों ने इसका विरोध किया और बाद में गांधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह चलाया गया। सन् 1905 में गोपाल कृष्ण गोखले की अध्यक्षता वाले कांग्रेस अधिवेशन बनारस में वामन राव लाखे, माधव राव सप्रे, पं. रविशंकर शुक्ल, पं. बद्री प्रसाद पुजारी (रायपुर) एवं रामदास चिंचोलकर, पं. रामगोपाल तिवारी (मुंगेली, बिलासपुर) गजाधर साव (मुंगेली, बिलासपुर) दर्शक एवं स्वयंसेवक के रूप में उपस्थित थे।[11] अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बनारस अधिवेशन में उग्रवादियों का विचार सर्वप्रथम खुलकर सामने आया और कांग्रेस शिविर में तरूण प्रतिनिधियों ने कांग्रेस के अंतर्गत एक राष्ट्रीय दल बनाया। इस अवसर पर लाला लाजपत राय, लोकमान्य तिलक, मध्यप्रांत के खापर्डे व डॉ. मुंजे का भाषण हुआ। दादासाहेब खापर्डे तथा डॉ. मुंजे उग्रवादी थे जबकि इस प्रांत के आर.एन.मुधोलकर और गंगाधर राव चिटनवीस नरमदल का प्रतिनिधित्व करते थे।[12]

निष्कर्ष

इन दिनों छत्तीसगढ़ का राजनीतिक नेतृत्व नागपुर के राजनीतिज्ञों के कर कमलों में था। छत्तीसगढ़ में तब भी उग्रवादी विचारधारा के नेता दादा साहेब खापर्डे व मुन्जे के समर्थकों की कमी नहीं थी। इन लोगों को अंग्रेजों की न्यायप्रियता में कोई विश्वास नहीं रहा था। ये लोग इस निश्चय पर पहुंचे कि प्रार्थना पत्रों द्वारा कुछ प्राप्त करना असंभव है। इन लोगों की दृष्टि में विदेशी राज्य अपमानजनक था। उनको आत्मनिर्भर स्वतंत्र कार्य में विश्वास था, किन्तु अंग्रेजों की उदारता एवं परोपकारिता से उन्हें किसी प्रकार की आशा नहीं थी। उन्होंने अपना कार्यक्रम निश्चित किया– विदेशी वस्तुओं का विदेशी संस्थाओं का बहिष्कार, स्वदेषी वस्तुओं का प्रयोग और राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना।[13]

सन्दर्भ सूची

1. रामैय्या, सीता, पट्टाभि, बी., (1958), : ''*कांग्रेस का इतिहास*' पृ. 1 सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन नई दिल्ली।
2. पापदत्त, रजनी, (1913), ''*इण्डिया टूडे*' मनीषा प्रकाशन कलकत्ता 1970 एवं बेडरवर्न, विलियम : ''*एलेन ऑक्टोवियन ह्यूम फादर ऑफ द इण्डियन नेशनल कांग्रेस* '' पृ. 10।
3. त्रिपाठी, संजय, त्रिपाठी, श्रीमती चंदन, ''*छत्तीसगढ़ वृहद् संदर्भ* '' पृ. 369–370, उपकार प्रकाशन आगरा।
4. नागपाल, ओम, (1987–88), ''*भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास* '' पृ. 16–17, कमल प्रकाशन इन्दौर।
5. नागपाल, ओम, ''*भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास* '' पृ. 17।
6. शुक्ला प्रयागदत्त, (संवत् 1959), ''*क्रांति के चरण* '' पृ. 44–45, लोक चेतना प्रकाशन जबलपुर।
7. शर्मा, अरविंद, (1999), ''*छत्तीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास* '' पृ. 51, अरपा पाकेट बुक्स बिलासपुर।
8. शर्मा, अरविंद ''*छत्तीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास* '' पृ. 51।
9. शर्मा, जे.पी., (1989), ''*मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन* '' 1920 से 1947, पृ. 38, दुर्गा पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
10. शर्मा, जे.पी., (1989), ''*मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन* '' 1920 से 1947, पृ. 38, दुर्गा पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
11. शर्मा, अरविंद ''*छत्तीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास* '' पृ. 52।
12. मिश्र, डी.पी., (1956), ''*मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास* '' पृ. 209, ग्वालियर गवर्नमेंट प्रेस।
13. सिंह, जी.एन., (1961), ''*भारत का संवैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास* '' पृ. 142 आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

****